ग़ालिब कैसे आऊँ?

दाऊद और जालूत

ġhālib kaise āūṅ? dāūd aur jālūt

How to Overcome. David and Goliath

by Bakhtullah

[*Zinda Kalam 13*]

(Urdu—Hindi script)

© 2026 Chashma Media.
published and printed by
GWCS, New Delhi

Bible text is from UGV.

illus. R. Gunther
https://www.freebibleimages.org/illustrations/ls-david-anointed/

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

मुझ पर भरोसा करो	8
मैं तेरे साथ हूँ	8
मैं ज़िंदा हूँ	9
मैं तुझे बचाऊँगा	12
मुझसे मिली नेमत इस्तेमाल करो	13
मैं ही फ़तह दिलाऊँगा	19
1 समुएल 17:1-53	22

ख़ुदा ने समुएल नबी के ज़रीए फ़रमाया था कि दाऊद इसराईल का बादशाह बनेगा। लेकिन दाऊद एकदम बादशाह न बना। बादशाह एक और था जिसका नाम साऊल था। इसलिए दाऊद पहले की तरह अपनी भेड़-बकरियों की देख-भाल करने में जुट गया। तब लिखा है,

> एक दिन फ़िलिस्तियों ने अपनी फ़ौज को यहूदाह के शहर सोका के क़रीब जमा किया। जवाब में साऊल ने अपनी फ़ौज को बुलाकर वादीए-ऐला में जमा किया। वहाँ इसराईल के मर्द जंग के लिए तरतीब से खड़े हुए। यों फ़िलिस्ती एक पहाड़ी पर खड़े थे और इसराईली दूसरी पहाड़ी पर। उनके बीच में वादी थी। फिर फ़िलिस्ती सफ़ों से जात शहर का पहलवान निकलकर इसराईलियों के सामने खड़ा हुआ।
>
> उसका नाम जालूत था और वह 9 फ़ुट से ज़्यादा लंबा था। उसने हिफ़ाज़त के लिए पीतल की कई चीज़ें पहन रखी थीं : सर पर ख़ोद, धड़ पर ज़िरा-बकतर जो 57 किलोग्राम वज़नी था और पिंडलियों पर बकतर। कंधों

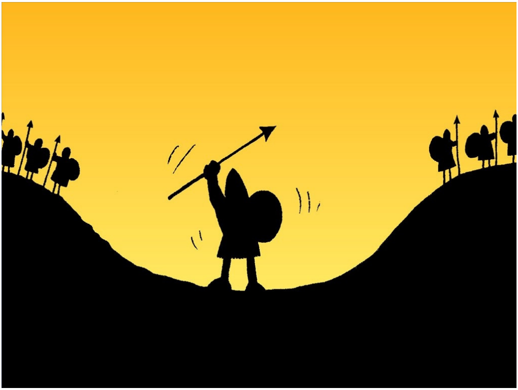

पर पीतल की शमशेर लटकी हुई थी। जो नेज़ा वह पकड़कर चल रहा था उसका दस्ता खड्डी के शहतीर जैसा मोटा और लंबा था, और उसके लोहे की नोक का वज़न 7 किलोग्राम से ज़्यादा था। जालूत के आगे आगे एक आदमी उसकी ढाल उठाए चल रहा था।

जालूत इसराईली सफ़ों के सामने रुककर गरजा, "तुम सब क्यों लड़ने के लिए सफ़आरा हो गए हो? क्या मैं फ़िलिस्ती नहीं हूँ जबकि तुम सिर्फ़ साऊल के नौकर-चाकर हो? चलो, एक आदमी को चुनकर उसे यहाँ नीचे मेरे पास भेज दो। अगर वह मुझसे लड़ सके और मुझे मार दे तो हम तुम्हारे ग़ुलाम बन जाएँगे। लेकिन अगर मैं उस पर ग़ालिब आकर उसे मार डालूँ तो तुम हमारे ग़ुलाम

बन जाओगे। आज मैं इसराईली सफ़ों की बदनामी करके उन्हें चैलेंज करता हूँ कि मुझे एक आदमी दो जो मेरे साथ लड़े।" जालूत की यह बातें सुनकर साऊल और तमाम इसराईली घबरा गए, और उन पर दहशत तारी हो गई। उस वक़्त दाऊद का बाप यस्सी काफ़ी बूढ़ा हो चुका था। उसके कुल 8 बेटे थे, और वह इफ़राता के इलाक़े के बैत-लहम में रहता था। लेकिन उसके तीन सबसे बड़े बेटे फ़िलिस्तियों से लड़ने के लिए साऊल की फ़ौज में भरती हो गए थे। सबसे बड़े का नाम इलियाब, दूसरे का अबीनदाब और तीसरे का सम्मा था। दाऊद तो सबसे छोटा भाई था। वह दूसरों की तरह पूरा वक़्त साऊल के पास न गुज़ार सका, क्योंकि उसे बाप की भेड़-बकरियों

को सँभालने की ज़िम्मेदारी दी गई थी। इसलिए वह आता-जाता रहा। चुनाँचे वह मौजूद नहीं था जब जालूत 40 दिन सुबहो-शाम इसराईलियों की सफ़ों के सामने खड़े होकर उन्हें चैलेंज करता रहा।

एक दिन यस्सी ने दाऊद से कहा, "बेटा, अपने भाइयों के पास कैंप में जाकर उनका पता करो। भुने हुए अनाज के यह 16 किलोग्राम और यह दस रोटियाँ अपने साथ लेकर जल्दी जल्दी उधर पहुँच जाओ। पनीर की यह दस टिक्कियाँ उनके कप्तान को दे देना। भाइयों का हाल मालूम करके उनकी कोई चीज़ वापस ले आओ ताकि

मुझे तसल्ली हो जाए कि वह ठीक हैं। वह वादीए-ऐला में साऊल और इसराईली फ़ौज के साथ फ़िलिस्तियों से लड़ रहे हैं।”

अगले दिन सुबह-सवेरे दाऊद ने रेवड़ को किसी और के सुपुर्द करके सामान उठाया और यस्सी की हिदायत के मुताबिक़ चला गया। जब वह कैंप के पास पहुँच गया तो इसराईली फ़ौजी नारे लगा लगाकर मैदाने-जंग के लिए निकल रहे थे। वह लड़ने के लिए तरतीब से खड़े हो गए, और दूसरी तरफ़ फ़िलिस्ती सफ़ें भी तैयार हुईं। यह देखकर दाऊद ने अपनी चीज़ें उस आदमी के पास छोड़ दीं जो लशकर के सामान की निगरानी कर रहा था, फिर भागकर मैदाने-जंग में भाइयों से मिलने चला गया।

वह अभी उनका हाल पूछ ही रहा था कि जाती जालूत मामूल के मुताबिक़ फ़िलिस्तियों की सफ़ों से निकलकर इसराईलियों के सामने वही तंज़ की बातें बकने लगा। दाऊद ने भी उसकी बातें सुनीं।
जालूत को देखते ही इसराईलियों के रोंगटे खड़े हो गए, और वह भागकर आपस में कहने लगे, “क्या आपने इस आदमी को हमारी तरफ़ बढ़ते हुए देखा? सुनें कि वह किस तरह हमारी बदनामी करके हमें चैलेंज कर रहा है। बादशाह ने एलान किया है कि जो शख़्स इसे मार दे उसे बड़ा अज्र मिलेगा। शहज़ादी से उसकी शादी होगी,

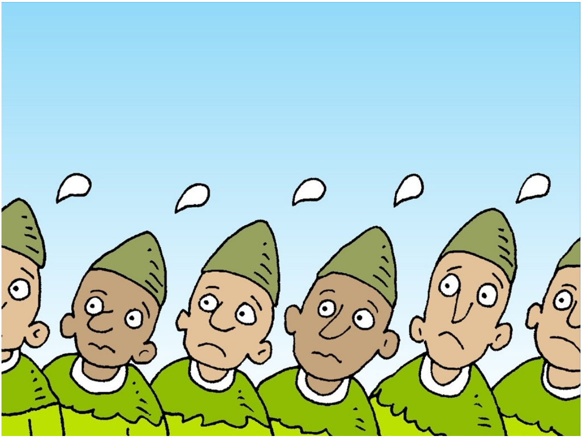

और आइंदा उसके बाप के ख़ानदान को टैक्स नहीं देना पड़ेगा।”

दाऊद ने साथवाले फ़ौजियों से पूछा, “क्या कह रहे हैं? उस आदमी को क्या इनाम मिलेगा जो इस फ़िलिस्ती को मारकर हमारी क़ौम की रुसवाई दूर करेगा? यह ना-मख़तून फ़िलिस्ती कौन है कि ज़िंदा ख़ुदा की फ़ौज की बदनामी करके उसे चैलेंज करे!” लोगों ने दुबारा दाऊद को बताया कि बादशाह उस आदमी को क्या देगा जो जालूत को मार डालेगा।

ख़ुदा हमें दाऊद की बात से एक पहला सबक़ सिखाता है। यह कि

मुझ पर भरोसा करो

► **जब दाऊद ने जालूत की हरकतें और अपनी क़ौम की बातें सुनीं तो क्या उसके रोंगटे भी खड़े हुए?**

नहीं।

► **क्यों नहीं?**

इसलिए कि उसे ख़ुदा पर पूरा भरोसा था।

► **लेकिन उसे ख़ुदा पर क्यों पूरा भरोसा था?**

इसलिए कि ख़ुदा ने उसे यक़ीन दिलाया था कि

मैं तेरे साथ हूँ

► **जालूत को देखकर दाऊद ने क्या कहा?**

उसने कहा कि यह ना-मख़तून फ़िलिस्ती कौन है कि ज़िंदा ख़ुदा की फ़ौज की बदनामी करके उसे चैलेंज करे।

► **दाऊद के नज़दीक जालूत क्यों बेकार था? क्या जालूत बहुत ताक़तवर नहीं था?**

जालूत ज़रूर बहुत डरावना था। फिर भी वह ना-मख़तून था। मतलब है वह ख़ुदा की क़ौम में शामिल नहीं था। इसलिए वह किस तरह जुर्रत कर सकता था कि ज़िंदा ख़ुदा की फ़ौज की बदनामी करे। जब ख़ुदा हमारे साथ है तो दुश्मन कभी नहीं जीत सकता। तीसरी बात : ख़ुदा फ़रमाता है कि

मैं ज़िंदा हूँ

► **ज़िंदा ख़ुदा कहकर हज़रत दाऊद क्या कहना चाहता है?**

वह यह कहना चाहता है कि दूसरी क़ौमों के देवता मुरदा हैं जबकि हमारा ख़ुदा ज़िंदा है।

► **जब सच्चा ख़ुदा ज़िंदा है और फ़िलिस्तियों के देवता मुरदा हैं तो फ़तह किस को हासिल होगी?**

फ़तह सच्चे ख़ुदा और उसकी क़ौम को हासिल होगी। इसी लिए दाऊद ग़ुस्से है कि इसराईली डर के मारे जालूत से लड़ने से डरते हैं। फिर लिखा है,

> जब दाऊद के बड़े भाई इलियाब ने दाऊद की बातें सुनीं तो उसे ग़ुस्सा आया और वह उसे झिड़कने लगा, "तू क्यों आया है? बयाबान में अपनी चंद-एक भेड़-बकरियों को किसके पास छोड़ आया है? मैं तेरी शोख़ी और दिल की शरारत ख़ूब जानता हूँ। तू सिर्फ़ जंग का तमाशा देखने आया है!"
> दाऊद ने पूछा, "अब मुझसे क्या ग़लती हुई? मैंने तो सिर्फ़ सवाल पूछा।" वह उससे मुड़कर किसी और के पास गया और वही बात पूछने लगा। वही जवाब मिला।

► **क्या दाऊद का बड़ा भाई उसकी यह बातें सुनकर ख़ुश था?**

नहीं। उसे ग़ुस्सा आया कि यह लड़का जो अब भेड़-बकरियों की देख-भाल कर रहा है इतनी बड़ी बातें कर रहा है।

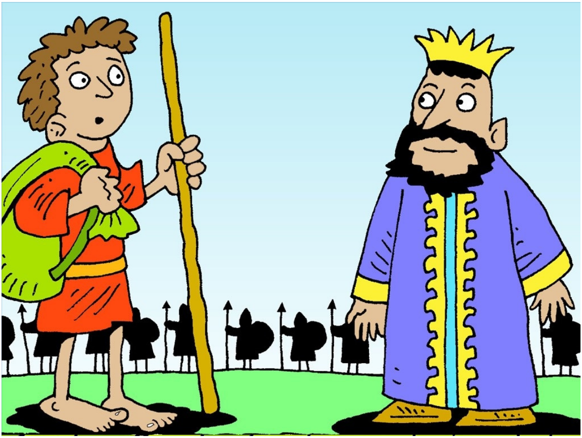

► **फिर भी अपने बड़े भाई की झिड़की सुनकर दाऊद ख़ामोश न हुआ। क्यों?**

इसलिए नहीं कि उसे अपनी ताक़त पर भरोसा था बल्कि इसलिए कि उसे ख़ुदा पर पूरा भरोसा है। तब लिखा है,

> दाऊद की यह बातें सुनकर किसी ने साऊल को इत्तला दी। साऊल ने उसे फ़ौरन बुलाया। दाऊद ने बादशाह से कहा, “किसी को इस फ़िलिस्ती की वजह से हिम्मत नहीं हारना चाहिए। मैं उससे लड़ूँगा।”
> साऊल बोला, “आप? आप जैसा लड़का किस तरह उसका मुक़ाबला कर सकता है? आप तो अभी बच्चे-

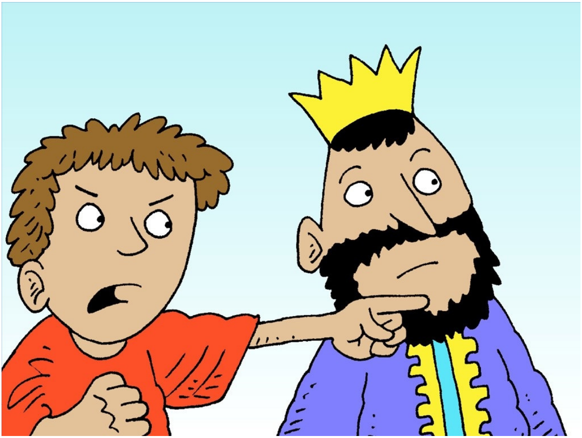

> से हो जबकि वह तजरबाकार जंगजू है जो जवानी से हथियार इस्तेमाल करता आया है।”

► **क्या साऊल बादशाह, दाऊद की बातें सुनकर ख़ुश हुआ?**

नहीं।

► **क्यों नहीं?**

दाऊद अब बच्चा-सा था जबकि जालूत तजरबाकार जंगजू था। तब लिखा है,

> लेकिन दाऊद ने इसरार किया, “मैं अपने बाप की भेड़-बकरियों की निगरानी करता हूँ। जब कभी कोई शेर-

> बबर या रीछ रेवड़ का जानवर छीनकर भाग जाता तो मैं उसके पीछे जाता और उसे मार मारकर भेड़ को उसके मुँह से छुड़ा लेता था। अगर शेर या रीछ जवाब में मुझ पर हमला करता तो मैं उसके सर के बालों को पकड़कर उसे मार देता था। इस तरह आपके ख़ादिम ने कई शेरों और रीछों को मार डाला है। यह ना-मख़तून भी उनकी तरह हलाक हो जाएगा, क्योंकि उसने ज़िंदा ख़ुदा की फ़ौज की बदनामी करके उसे चैलेंज किया है। जिस रब ने मुझे शेर और रीछ के पंजे से बचा लिया है वह मुझे इस फ़िलिस्ती के हाथ से भी बचाएगा।”

इससे ख़ुदा हमें एक चौथी बात सिखाता है, यह कि

मैं तुझे बचाऊँगा

► **जब साऊल बादशाह कहता है कि दाऊद अब सिर्फ़ बच्चा-सा है तो दाऊद क्या जवाब देता है?**

वह कहता है कि मैंने भेड़-बकरियों के बचाव के लिए कई-एक रीछ और शेर मार डाले हैं। मतलब है मेरा भी तजरबा है। सबसे बड़ी बात यह कि जिस ख़ुदा ने मुझे इन जंगली जानवरों से बचाया है वह मुझे जालूत से भी बचाएगा। तब लिखा है,

> साऊल बोला, “ठीक है, जाएँ और रब आपके साथ हो।” उसने दाऊद को अपना ज़िरा-बकतर और पीतल का ख़ोद पहनाया। फिर दाऊद ने साऊल की तलवार बाँधकर

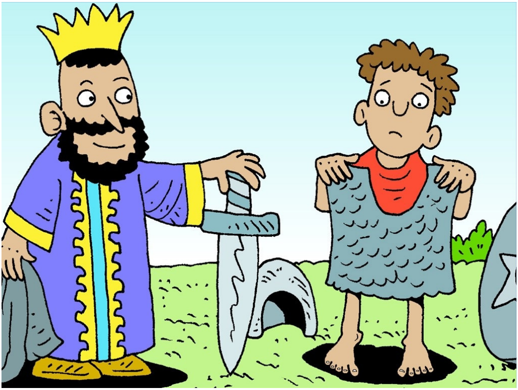

> चलने की कोशिश की। लेकिन उसे बहुत मुश्किल लग रहा था। उसने साऊल से कहा, “मैं यह चीज़ें पहनकर नहीं लड़ सकता, क्योंकि मैं इनका आदी नहीं हूँ।” उन्हें उतारकर उसने नदी से पाँच चिकने चिकने पत्थर चुनकर उन्हें अपनी चरवाहे की थैली में डाल लिया। फिर चरवाहे की अपनी लाठी और फ़लाख़न पकड़कर वह फ़िलिस्ती से लड़ने के लिए इसराईली सफ़ों से निकला।

दाऊद की इन बातों से ख़ुदा हमें एक पाँचवीं बात सिखाता है, यह कि

मुझसे मिली नेमत इस्तेमाल करो

► **साऊल ने मानकर दाऊद को कुछ सामान दिया। क्या दिया?**

उसने दाऊद को अपने अच्छे हथियार पहनाए ताकि वह बेहतर तौर से पहलवान से लड़ सके।

► **क्या दाऊद इससे मुतमइन हुआ?**

नहीं।

► **क्यों नहीं?**

वह इनका आदी नहीं था। चलने में और इन्हें चलाने में उसे दिक़्क़त हो रही थी।

► **तब उसने क्या किया?**

वह इन्हें छोड़ चरवाहे का हथियार हाथ में लेकर जंग के लिए निकला।

► **चरवाहे का हथियार क्या था?**

फ़लाख़न।

► **फ़लाख़न क्यों?**

तलवार और ढाल से वह मुश्किल ही ऐसे लंबे और तजरबेकार जंगजू का मुक़ाबला कर सकता था। लेकिन फ़लाख़न फ़रक़ था। ख़ुदा ने उसे फ़लाख़न चलाने की ख़ास नेमत दी थी। अब वह अपनी यह नेमत ख़ूब इस्तेमाल कर सकता था। साथ साथ वह पहलवान के हमलों से बचकर दूर से उस पर हमला कर सकता था।

► **क्या आप वह नेमत इस्तेमाल कर रहे हैं जो ख़ुदा ने आपको बख़्श दी है?**

दाऊद ने पहचान लिया था कि मेरी नेमत फ़लाख़न चलाना है, और इसी नेमत से वह जीत गया।

अब जालूत, दाऊद की जानिब बढ़ा। ढाल को उठानेवाला उसके आगे आगे चल रहा था। उसने हिक़ारत से दाऊद का जायज़ा लिया, क्योंकि वह गोरा और ख़ूबसूरत नौजवान था।

► **क्या जालूत पहलवान, दाऊद से मुतअस्सिर हुआ?**

नहीं।

► **क्यों नहीं?**

इसलिए कि दाऊद जालूत की निसबत नाज़ुक लग रहा था। वह गोरा और ख़ूबसूरत नौजवान था। यानी ऐसा आदमी था जिसने कभी जंग में हिस्सा न लिया हो। तब लिखा है,

> पहलवान गरजा, "क्या मैं कुत्ता हूँ कि तू लाठी लेकर मेरा मुक़ाबला करने आया है?" अपने देवताओं के नाम लेकर वह दाऊद पर लानत भेजकर चिल्लाया, "इधर आ ताकि मैं तेरा गोश्त परिंदों और जंगली जानवरों को खिलाऊँ।"
>
> दाऊद ने जवाब दिया, "**आप तलवार, नेज़ा और शमशेर लेकर मेरा मुक़ाबला करने आए हैं, लेकिन मैं रब्बुल-अफ़वाज का नाम लेकर आता हूँ, उसी का**

> **नाम जो इसराईली फ़ौज का ख़ुदा है।** क्योंकि आपने उसी को चैलेंज किया है। आज ही रब आपको मेरे हाथ में कर देगा, और मैं आपका सर क़लम कर दूँगा। इसी दिन मैं फ़िलिस्ती फ़ौजियों की लाशें परिंदों और जंगली जानवरों को खिला दूँगा। तब तमाम दुनिया जान लेगी कि इसराईल का ख़ुदा है। सब जो यहाँ मौजूद हैं जान लेंगे कि रब को हमें बचाने के लिए तलवार या नेज़े की ज़रूरत नहीं होती। वह ख़ुद ही जंग कर रहा है, और वही आपको हमारे क़ब्ज़े में कर देगा।"

► **क्या दाऊद यह धमकियाँ सुनकर डर गया?**

बिलकुल नहीं।

► **क्यों नहीं?**

इसलिए कि उसे अपने ख़ुदा पर पूरा भरोसा था। वह जानता था कि जिसने मुझे रीछों और शेरों से बचाया है वह मुझे पहलवान से भी बचाएगा।

► **दाऊद को इतना यक़ीन क्यों था कि ख़ुदा मेरी मदद करेगा? क्या इसलिए कि वह इतना अच्छा था?**

नहीं। उसे इसलिए इतना यक़ीन था क्योंकि जालूत ने ख़ुदा को चैलेंज किया था यह समझकर कि मेरे देवता ज़्यादा ताक़तवर हैं। जब इनसान सोचता है कि वह ख़ुदा को चैलेंज कर सकता है तो ख़ुदा ख़ामोश नहीं रहता। जो ख़ुदा और उसकी क़ौम की रुसवाई

करता है उसे किसी वक़्त इसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी। साथ साथ ख़ुदा अपनी क़ौम को दुश्मन का सामना करने की तक़वियत देता है। तब लिखा है,

> जालूत, दाऊद पर हमला करने के लिए आगे बढ़ा, और दाऊद भी उसकी तरफ़ दौड़ा। चलते चलते उसने अपनी थैली से पत्थर निकाला और उसे फ़लाख़न में रखकर ज़ोर से चलाया। पत्थर उड़ता उड़ता फ़िलिस्ती के माथे पर जा लगा। वह खोपड़ी में धँस गया, और पहलवान मुँह के बल गिर गया।

इससे ख़ुदा हमें एक छटी बात सिखाता है, यह कि

मैं ही फ़तह दिलाऊँगा

► **दाऊद ने अपनी कमज़ोरी के बावुजूद जालूत पर फ़तह पाई। इससे हम अपनी ज़िंदगी के लिए क्या सीख सकते हैं?**

हम यह सीख सकते हैं कि जब हम ख़ुदा पर भरोसा करते हैं तो वह ज़रूर हमारी मदद करता है। वह कभी हमें अकेला नहीं छोड़ता। चाहे हम कमज़ोर और नाक़ाबिल क्यों न लगें लेकिन ख़ुदा की नज़र में हम कमज़ोर नहीं हैं, और वह हमें एक दिन फ़तह दिलाएगा। अगर इस दुनिया में नहीं तो अगली दुनिया में। तब लिखा है,

> यों दाऊद फ़लाख़न और पत्थर से फ़िलिस्ती पर ग़ालिब आया। उसके हाथ में तलवार नहीं थी। तब उसने जालूत

की तरफ़ दौड़कर उसी की तलवार मियान से खींचकर फ़िलिस्ती का सर काट डाला।
इसराईल और यहूदाह के मर्द फ़तह के नारे लगा लगाकर फ़िलिस्तियों पर टूट पड़े। उनका ताक़्क़ुब करते करते वह जात और अक़रून के दरवाज़ों तक पहुँच गए। जो रास्ता शारैम से जात और अक़रून तक जाता है उस पर हर तरफ़ फ़िलिस्तियों की लाशें नज़र आईं। फिर इसराईलियों ने वापस आकर फ़िलिस्तियों की छोड़ी हुई लशकरगाह को लूट लिया।

आज भी ख़ुदा आपसे पूछ रहा है कि

► **क्या तुझे मुझ पर भरोसा है?**

सदियों बाद ख़ुदा ने ईसा मसीह को इस दुनिया में भेज दिया ताकि हम गुनाह और मौत के क़ब्ज़े से नजात पाएँ। उसी पर भरोसा करने से आप नजात पा सकते हैं।

► **क्या तुझे पूरा यक़ीन है कि मैं ज़िंदा हूँ?**

ख़ुदा ज़िंदा है इसलिए ईसा मसीह मुरदा न रह सका। वह मुरदों में से जी उठा। उस पर भरोसा करने से आप भी एक दिन जी उठेंगे।

► **क्या तुझे यक़ीन है कि मैं तुझे बचाऊँगा?**

ईसा मसीह पर भरोसा करने से गुनाह और मौत से नजात यक़ीनी है।

► **क्या तू मुझसे मिली नेमत इस्तेमाल करने को तैयार है?**

जो नेमत ख़ुदा ने आपको दी है उसे इस्तेमाल करें। सबसे बड़ी नेमत सबसे बड़ा हथियार भी है और सबको दी गई है। वह क्या? ख़ुदा का कलाम।

► **क्या तुझे यक़ीन है कि मैं तुझे फ़तह दिलाऊँगा?**

मसीह ने इबलीस और मौत पर फ़तह पाई। इसलिए उस पर भरोसा करें तो आपको भी फ़तह हासिल होगी।

1 समुएल 17:1-53

जाती जालूत

एक दिन फ़िलिस्तियों ने अपनी फ़ौज को यहूदाह के शहर सोका के क़रीब जमा किया। वह इफ़स-दम्मीम में ख़ैमाज़न हुए जो सोका और अज़ीक़ा के दरमियान है। जवाब में साऊल ने अपनी फ़ौज को बुलाकर वादीए-ऐला में जमा किया। वहाँ इसराईल के मर्द जंग के लिए तरतीब से खड़े हुए। यों फ़िलिस्ती एक पहाड़ी पर खड़े थे और इसराईली दूसरी पहाड़ी पर। उनके बीच में वादी थी।

फिर फ़िलिस्ती सफ़ों से जात शहर का पहलवान निकलकर इसराईलियों के सामने खड़ा हुआ। उसका नाम जालूत था और वह 9 फ़ुट से ज़्यादा लंबा था। उसने हिफ़ाज़त के लिए पीतल की कई चीज़ें पहन रखी थीं : सर पर ख़ोद, धड़ पर ज़िरा-बकतर जो 57 किलोग्राम वज़नी था और पिंडलियों पर बकतर। कंधों पर पीतल की शमशेर लटकी हुई थी। जो नेज़ा वह पकड़कर चल रहा था उसका दस्ता खड्डी के शहतीर जैसा मोटा और लंबा था, और उसके लोहे की नोक का वज़न 7 किलोग्राम से ज़्यादा था। जालूत के आगे आगे एक आदमी उसकी ढाल उठाए चल रहा था।

जालूत इसराईली सफ़ों के सामने रुककर गरजा, “तुम सब क्यों लड़ने के लिए सफ़आरा हो गए हो? क्या मैं फ़िलिस्ती नहीं हूँ

जबकि तुम सिर्फ़ साऊल के नौकर-चाकर हो? चलो, एक आदमी को चुनकर उसे यहाँ नीचे मेरे पास भेज दो। अगर वह मुझसे लड़ सके और मुझे मार दे तो हम तुम्हारे ग़ुलाम बन जाएँगे। लेकिन अगर मैं उस पर ग़ालिब आकर उसे मार डालूँ तो तुम हमारे ग़ुलाम बन जाओगे। आज मैं इसराईली सफ़ों की बदनामी करके उन्हें चैलेंज करता हूँ कि मुझे एक आदमी दो जो मेरे साथ लड़े।"

जालूत की यह बातें सुनकर साऊल और तमाम इसराईली घबरा गए, और उन पर दहशत तारी हो गई।

दाऊद फ़ौज के पास जाता है

उस वक़्त दाऊद का बाप यस्सी काफ़ी बूढ़ा हो चुका था। उसके कुल 8 बेटे थे, और वह इफ़राता के इलाक़े के बैत-लहम में रहता था। लेकिन उसके तीन सबसे बड़े बेटे फ़िलिस्तियों से लड़ने के लिए साऊल की फ़ौज में भरती हो गए थे। सबसे बड़े का नाम इलियाब, दूसरे का अबीनदाब और तीसरे का सम्मा था। दाऊद तो सबसे छोटा भाई था। वह दूसरों की तरह पूरा वक़्त साऊल के पास न गुज़ार सका, क्योंकि उसे बाप की भेड़-बकरियों को सँभालने की ज़िम्मेदारी दी गई थी। इसलिए वह आता-जाता रहा। चुनाँचे वह मौजूद नहीं था जब जालूत 40 दिन सुबहो-शाम इसराईलियों की सफ़ों के सामने खड़े होकर उन्हें चैलेंज करता रहा।

एक दिन यस्सी ने दाऊद से कहा, “बेटा, अपने भाइयों के पास कैंप में जाकर उनका पता करो। भुने हुए अनाज के यह 16 किलोग्राम और यह दस रोटियाँ अपने साथ लेकर जल्दी जल्दी उधर पहुँच जाओ। पनीर की यह दस टिक्कियाँ उनके कप्तान को दे देना। भाइयों का हाल मालूम करके उनकी कोई चीज़ वापस ले आओ ताकि मुझे तसल्ली हो जाए कि वह ठीक हैं। वह वादीए-ऐला में साऊल और इसराईली फ़ौज के साथ फ़िलिस्तियों से लड़ रहे हैं।”
अगले दिन सुबह-सवेरे दाऊद ने रेवड़ को किसी और के सुपुर्द करके सामान उठाया और यस्सी की हिदायत के मुताबिक़ चला गया। जब वह कैंप के पास पहुँच गया तो इसराईली फ़ौजी नारे लगा लगाकर मैदाने-जंग के लिए निकल रहे थे। वह लड़ने के लिए तरतीब से खड़े हो गए, और दूसरी तरफ़ फ़िलिस्ती सफ़ें भी तैयार हुईं। यह देखकर दाऊद ने अपनी चीज़ें उस आदमी के पास छोड़ दीं जो लशकर के सामान की निगरानी कर रहा था, फिर भागकर मैदाने-जंग में भाइयों से मिलने चला गया।
वह अभी उनका हाल पूछ ही रहा था कि जाती जालूत मामूल के मुताबिक़ फ़िलिस्तियों की सफ़ों से निकलकर इसराईलियों के सामने वही तंज़ की बातें बकने लगा। दाऊद ने भी उसकी बातें सुनीं। जालूत को देखते ही इसराईलियों के रोंगटे खड़े हो गए, और वह भागकर आपस में कहने लगे, “क्या आपने इस आदमी

को हमारी तरफ़ बढ़ते हुए देखा? सुनें कि वह किस तरह हमारी बदनामी करके हमें चैलेंज कर रहा है। बादशाह ने एलान किया है कि जो शख़्स इसे मार दे उसे बड़ा अज्र मिलेगा। शहज़ादी से उसकी शादी होगी, और आइंदा उसके बाप के ख़ानदान को टैक्स नहीं देना पड़ेगा।”

दाऊद ने साथवाले फ़ौजियों से पूछा, “क्या कह रहे हैं? उस आदमी को क्या इनाम मिलेगा जो इस फ़िलिस्ती को मारकर हमारी क़ौम की रुसवाई दूर करेगा? यह ना-मख़तून फ़िलिस्ती कौन है कि ज़िंदा ख़ुदा की फ़ौज की बदनामी करके उसे चैलेंज करे!” लोगों ने दुबारा दाऊद को बताया कि बादशाह उस आदमी को क्या देगा जो जालूत को मार डालेगा।

जब दाऊद के बड़े भाई इलियाब ने दाऊद की बातें सुनीं तो उसे ग़ुस्सा आया और वह उसे झिड़कने लगा, “तू क्यों आया है? बयाबान में अपनी चंद-एक भेड़-बकरियों को किसके पास छोड़ आया है? मैं तेरी शोख़ी और दिल की शरारत ख़ूब जानता हूँ। तू सिर्फ़ जंग का तमाशा देखने आया है!” दाऊद ने पूछा, “अब मुझसे क्या ग़लती हुई? मैंने तो सिर्फ़ सवाल पूछा।” वह उससे मुड़कर किसी और के पास गया और वही बात पूछने लगा। वही जवाब मिला।

हथियार का चुनाव

दाऊद की यह बातें सुनकर किसी ने साऊल को इत्तला दी। साऊल ने उसे फ़ौरन बुलाया। दाऊद ने बादशाह से कहा, “किसी को इस फ़िलिस्ती की वजह से हिम्मत नहीं हारना चाहिए। मैं उससे लड़ूँगा।” साऊल बोला, “आप? आप जैसा लड़का किस तरह उसका मुक़ाबला कर सकता है? आप तो अभी बच्चे-से हो जबकि वह तजरबाकार जंगजू है जो जवानी से हथियार इस्तेमाल करता आया है।”

लेकिन दाऊद ने इसरार किया, “मैं अपने बाप की भेड़-बकरियों की निगरानी करता हूँ। जब कभी कोई शेर-बबर या रीछ रेवड़ का जानवर छीनकर भाग जाता तो मैं उसके पीछे जाता और उसे मार मारकर भेड़ को उसके मुँह से छुड़ा लेता था। अगर शेर या रीछ जवाब में मुझ पर हमला करता तो मैं उसके सर के बालों को पकड़कर उसे मार देता था। इस तरह आपके ख़ादिम ने कई शेरों और रीछों को मार डाला है। यह ना-मख़तून भी उनकी तरह हलाक हो जाएगा, क्योंकि उसने ज़िंदा ख़ुदा की फ़ौज की बदनामी करके उसे चैलेंज किया है। जिस रब ने मुझे शेर और रीछ के पंजे से बचा लिया है वह मुझे इस फ़िलिस्ती के हाथ से भी बचाएगा।”

साऊल बोला, “ठीक है, जाएँ और रब आपके साथ हो।” उसने दाऊद को अपना ज़िरा-बकतर और पीतल का ख़ोद पहनाया।

फिर दाऊद ने साऊल की तलवार बाँधकर चलने की कोशिश की। लेकिन उसे बहुत मुश्किल लग रहा था। उसने साऊल से कहा, “मैं यह चीज़ें पहनकर नहीं लड़ सकता, क्योंकि मैं इनका आदी नहीं हूँ।” उन्हें उतारकर उसने नदी से पाँच चिकने चिकने पत्थर चुनकर उन्हें अपनी चरवाहे की थैली में डाल लिया। फिर चरवाहे की अपनी लाठी और फ़लाख़न पकड़कर वह फ़िलिस्ती से लड़ने के लिए इसराईली सफ़ों से निकला।

दाऊद की फ़तह

जालूत दाऊद की जानिब बढ़ा। ढाल को उठानेवाला उसके आगे आगे चल रहा था। उसने हिक़ारतआमेज़ नज़रों से दाऊद का जायज़ा लिया, क्योंकि वह गोरा और ख़ूबसूरत नौजवान था। वह गरजा, “क्या मैं कुत्ता हूँ कि तू लाठी लेकर मेरा मुक़ाबला करने आया है?” अपने देवताओं के नाम लेकर वह दाऊद पर लानत भेजकर चिल्लाया, “इधर आ ताकि मैं तेरा गोश्त परिंदों और जंगली जानवरों को खिलाऊँ।”

दाऊद ने जवाब दिया, “आप तलवार, नेज़ा और शमशेर लेकर मेरा मुक़ाबला करने आए हैं, लेकिन मैं रब्बुल-अफ़वाज का नाम लेकर आता हूँ, उसी का नाम जो इसराईली फ़ौज का ख़ुदा है। क्योंकि आपने उसी को चैलेंज किया है। आज ही रब आपको मेरे हाथ में कर देगा, और मैं आपका सर क़लम कर दूँगा। इसी दिन

मैं फ़िलिस्ती फ़ौजियों की लाशें परिंदों और जंगली जानवरों को खिला दूँगा। तब तमाम दुनिया जान लेगी कि इसराईल का ख़ुदा है। सब जो यहाँ मौजूद हैं जान लेंगे कि रब को हमें बचाने के लिए तलवार या नेज़े की ज़रूरत नहीं होती। वह ख़ुद ही जंग कर रहा है, और वही आपको हमारे क़ब्ज़े में कर देगा।”

जालूत दाऊद पर हमला करने के लिए आगे बढ़ा, और दाऊद भी उसकी तरफ़ दौड़ा। चलते चलते उसने अपनी थैली से पत्थर निकाला और उसे फ़लाख़न में रखकर ज़ोर से चलाया। पत्थर उड़ता उड़ता फ़िलिस्ती के माथे पर जा लगा। वह खोपड़ी में धँस गया, और पहलवान मुँह के बल गिर गया। यों दाऊद फ़लाख़न और पत्थर से फ़िलिस्ती पर ग़ालिब आया। उसके हाथ में तलवार नहीं थी। तब उसने जालूत की तरफ़ दौड़कर उसी की तलवार मियान से खींचकर फ़िलिस्ती का सर काट डाला।

जब फ़िलिस्तियों ने देखा कि हमारा पहलवान हलाक हो गया है तो वह भाग निकले। इसराईल और यहूदाह के मर्द फ़तह के नारे लगा लगाकर फ़िलिस्तियों पर टूट पड़े। उनका ताक़्क़ुब करते करते वह जात और अक़रून के दरवाज़ों तक पहुँच गए। जो रास्ता शारैम से जात और अक़रून तक जाता है उस पर हर तरफ़ फ़िलिस्तियों की लाशें नज़र आईं। फिर इसराईलियों ने वापस आकर फ़िलिस्तियों की छोड़ी हुई लशकरगाह को लूट लिया।